International Journal of Yoga, Physiotherapy and Physical Education
Online ISSN: 2456-5067; Impact Factor: RJIF 5.24
www.sportsjournal.in
Volume 2; Issue 2; February 2017; Page No. 23-25

शारीरिक शिक्षा संचालकों का कार्यभार तथा जिम्मेदारियों का मूल्यांकन

Dr. Khushal Jagtrao Alaspure

Director of Physical Education, Arts College Badnera Railway Dist. Amravati, Maharashtra, India

सारांश

इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य शारीरिक शिक्षा संचालकों का कार्यभार तथा जिम्मेदारियों का मूल्यांकन करना यह था। इस अनुसंधान कार्य में संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय से संलग्नित महाविदयालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों को जनसंख्या के रुप में लिया गया था। इस अनुसंधान में 30 प्रधानाचार्यों का चयन विषयों के रूप में किया गया था। इस अनुसंधान कार्य में संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय से संलग्नित महाविदयालयों में कार्यरत 30 प्रधानाचार्यों का चयन साधारण याद्रच्छिकी न्यादर्श विधी द्वारा किया गया था। इस अनुसंधान कार्य में अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्नलिखित साहित्य सामग्री का प्रयोग आँकडे एकत्रित करने के लिये किया गया था। अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयंनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था। परीक्षण से प्राप्त आँकड़ों का प्रतिशत प्रमाण द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया तथा इसके आधार पर शारीरिक शिक्षा संचालकों का कार्यभार तथा जिम्मेदारियों का मूल्यांकन किया गया। महाविद्यालय में अनुशासन, छात्रों के सर्वांगिन विकास, खिलाडियों का निर्माण करना तथा महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा संचालक पुरी तरह से आपना कार्य एवं जिम्मेदारियों को निभाते है। महाविद्यालय का नाम बढाने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक पुरी तरह से योगदान देते है तथा खेल एवं क्रीडाओं के अलावा जिम्मेदारी सभालने में सक्षम होते है। महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना, छात्रसंघ निवडणूक, एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को करने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक यह मदगार सिध्द होते है।

Keywords: याद्रच्छिकी न्यादर्श विधी, शारीरिक शिक्षा, खेल एवं क्रीडाओं, जनसंख्या।

प्रस्तावना

प्राचीन भारत में शिक्षा की अवधारणा पर भी इसका गहरा असर है। वैदिक शिक्षा में अध्यवसाय, शुचिता और स्वतंत्र सोच को विशेष महत्ता दी जाती थी। भक्ति, कर्म और ज्ञान शिक्षा के तीन मुलमंत्र थे। ऋग्वेद में शिक्षा व्यक्ति को निःस्वार्थ व आत्मनिर्भर बनाने की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत की गई। उपनिषदों में शिक्षा को मुक्ति के साधन के रूप में जाना जाता था। भारत में शिक्षा की आधुनिक अवधारणा प्राचीन भारतीय अवधारणा से ज्यादा भिन्न नही है। अध्यात्मवाद और धर्म आज भी आधुनिक शिक्षाविदों व दार्शनिकों पर अपना प्रभाव रखता है। विवेकानंद का मानना है कि धर्म ही शिक्षा का सार है। इस बात की पुष्टि तब होती है जब वह कहते है, ''शिक्षा मनुष्य के भीतर पहले से ही विद्यमान आध्यात्मिक पूर्णता का पुष्टीकरण है''। ख1,

विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रम के अंतर्गत आती है। इसमें विद्यार्थियों की विभिन्न खेल की क्षमताएँ, शारीरिक क्षमताएँ, खेलों का ज्ञान इत्यादि जिन क्रियाओं द्वारा बढती हैं और जिन क्रियाओं से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है, उन्हीं क्रियाओं को कार्यक्रम में शामिल किया जाता है। शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रम के मूल्यांकन में सुविधाएँ अभ्यासक्रम शारीरिक शिक्षा के कर्मचारी तथा शारीरिक शिक्षा प्रशासन इत्यादि आता है। यह मूल्यांकन कुछ समय बाद होना आवश्यक है। इसमें व्यक्तिगत मूल्यांकन भी शामिल होता है, जिसमें शिक्षक के गुणों का तथा त्रुटियों का मूल्यांकन किया जाता है, और उन्हीं त्रुटियों को दूर करने का मार्ग बताया जाता है। शिक्षक का भी मूल्यांकन उनके स्वयं मूल्यांकन द्वारा ही सही होता है। वैसे पर्यवेक्षण का कार्य शिक्षकों का मूल्यांकन कर उनकी शिक्षा पद्धतियों में आवश्यक बदलाव और उनका स्तर ऊँचा उठाने में सहायता करना है। पर्यवेक्षक का कार्य ही शिक्षकों का मूल्यांकन करना होता है। पर्यवेक्षक शिक्षकों के शिक्षा की स्थिति का अवलोकन करता है और उसके बाद वह उसे शिक्षक की कमियाँ बताता है कि उसे कहाँ अपनी पद्धति को बदलना है, और इसका मार्गदर्शन करता है। शिक्षकों का मूल्यांकन प्रशासक द्वारा दूसरे पुराने शिक्षकों द्वारा तथा पर्यवेक्षकों द्वारा किया जाता है और शिक्षक स्वयं मूल्यांकन भी करे तो उसे अपनी पद्धतियों में सुधार करने की जानकारी स्वयं ही पता चल जाती है।ख2,

कार्यपद्धति

जनसंख्या

इस अनुसंधान कार्य में संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय से संलग्नित महाविदयालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों को जनसंख्या के रुप में लिया गया था।

विषयों का चयन

इस अनुसंधान में 30 प्रधानाचार्यों का चयन विषयों के रूप में किया गया था।

न्यादर्श का चुनाव

इस अनुसंधान कार्य में संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय से संलग्नित महाविदयालयों में कार्यरत 30 प्रधानाचार्यों का चयन साधारण याद्रच्छिकी न्यादर्श विधी द्वारा किया गया था।

आँकडे प्राप्त करने कि सहायक सामग्री

इस अनुसंधान कार्य में अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्नलिखित साहित्य सामग्री का प्रयोग आँकडे एकत्रित करने के लिये किया गया था। अनुसंधानकर्ता द्वारा स्वयंनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया था।

अनुसंधानकर्ताने मार्गदर्शक एवं शारीरिक शिक्षा के विशेषज्ञों से मिलके उद्देश्यों के आधारपर प्रश्नावली तयार की गई जिसको प्राथमिक प्रश्नावली कहा गया। जिसके अंतर्गत दो विभाग किए गए प्रथम विभाग में व्यक्तिगत जानकारी पुछी गई तथा द्वितीय भाग में प्रमुख्य प्रश्नावली थी। इस प्रश्नावली के अंतर्गत शारीरिक शिक्षा संचालकों का कार्यभार तथा जिम्मेदारियों का मूल्यांकन करने के

लिए 38 प्रश्न सम्मलित किये गये थे तथा जिन प्रश्नों की विश्वसनियता अधिक आइ उन प्रश्नों को उस प्रश्नावली में रखा गया इस प्रकार 13 प्रश्नों को प्रश्नावली का प्रयोग शारीरिक शिक्षा संचालकों का कार्यभार तथा जिम्मेदारियों का मूल्यांकन करणे के लिए किया गया।

आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

परीक्षण से प्राप्त आँकड़ों का प्रतिशत प्रमाण द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया तथा इसके आधार पर शारीरिक शिक्षा संचालकों का कार्यभार तथा जिम्मेदारियों का मूल्यांकन किया गया।

सारणी क्र. 1: शारीरिक शिक्षा संचालकों का कार्यभार तथा जिम्मेदारियों का मूल्यांकन करने के लिए प्रधानाचार्यों के मत तथा प्रतिशत प्रमाण को दर्शानेवाली सारणी

अ.क.	कथन	हॉ	%	नहीं	%
1	महाविद्यालय में अनुशासन रखने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक मदगार सावित होते है?	30	100.00	0	0.00
2	शारीरिक शिक्षा संचालक छात्रों के सर्वांगिन विकास में लाभकारी है?	29	96.67	1	3.33
3	शारीरिक शिक्षा संचालक के मार्गदर्शन से उच्च खिलाडियों का निर्माण होता है?	30	100.00	0	0.00
4	शारीरिक शिक्षा संचालक के कार्यो से महाविद्यालय का नाम हो रहा है?	28	93.33	2	6.67
5	शारीरिक शिक्षा संचालक यह दुसरे अधिव्याख्याताओं के समान महाविद्यालय का अहम घटक है?	30	100.00	0	0.00
6	शारीरिक शिक्षा संचालको को खेल और क्रीडाओं के विकास के लिए आर्थिक स्वात्रंत्र्य दिया जाता है?	1	3.33	29	96.67
7	शारीरिक शिक्षा संचालक यह महाविद्यालय और छात्र के बिच का दुआ हो सकता है?	30	100.00	0	0.00
8	शारीरिक शिक्षा संचालको दुसरे अधिव्याख्याताओं के समान महाविद्यालय में आनेके समय का बंधंन होता है क्या?	24	80.00	6	20.00
9	शारीरिक शिक्षा संचालक यह अपनी जिम्मेदारी बखुब पुरा करते है?	20	66.67	10	33.33
10	महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा संचालक पुरी तरह से आपना कार्य एवं जिम्मेदारियों को निभाते है?	25	83.33	5	16.67
11	महाविद्यालय का नाम बढाने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक पुरी तरह से योगदान देते है?	17	56.67	13	43.33
12	महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा संचालक यह खेल एवं क्रीडाओं के अलावा जिम्मेदारी सभालने में सक्षम है?	29	96.67	1	3.33
13	महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना, छात्रसंघ निवडणूक, एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को करने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक यह मदगार है क्या?	21	70.00	9	30.00

सारणी क्रमांक–1 में महाविद्यालय में अनुशासन रखने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक मदगार सावित होते है? यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 30 (100.00%) हॉ में तो 0 (00.00%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है कि महाविद्यालय में अनुशासन रखने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक मदगार सावित होते होगे।

शारीरिक शिक्षा संचालक छात्रों के सर्वांगिन विकास में लाभकारी है? यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 29 (96.67%) हॉ में तो 1 (3.33%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है कि शारीरिक शिक्षा संचालक छात्रों के सर्वांगिन विकास में प्रयत्नशिल रहते होगे और जिससे महाविद्यालयों के छात्रों का सर्वांगिन विकास हो रहा होगा।

शारीरिक शिक्षा संचालक के मार्गदर्शन से उच्च खिलाडियों का निर्माण होता है? यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 30 (100.00%) हॉ में तो 0 (00.00%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, शारीरिक शिक्षा संचालक महाविद्यालय में छात्रों को उचित खेलो की शिक्षा प्रदान करते होगे जिस कारण छात्रों के कौशल्य का विकास होकर अच्छे खिलाडियों का निर्माण होता होगा।

शारीरिक शिक्षा संचालक के कार्यो से महाविद्यालय का नाम हो रहा है?यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 28 (93.33%) हॉ में तो 2 (6. 67%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, शारीरिक शिक्षा संचालकों के कार्यो से महाविद्यालय का नाम गौरांकित होता होगा।

शारीरिक शिक्षा संचालक यह दुसरे अधिव्याख्याताओं के समान महाविद्यालय का अहम घटक है?यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 30 (100.00%) हॉ में तो 0 (00.00%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, शारीरिक शिक्षा संचालक यह दुसरे अधिव्याख्याताओं के समान महाविद्यालय का अहम घटक क्योकि वह बच्यो के सर्वागिन विकास में लाभकारी है जिससे बच्यों के पढाई में भी बढोतरी होती है।

शारीरिक शिक्षा संचालको को खेल और क्रीडाओं के विकास के लिए आर्थिक स्वात्रंत्र्य दिया जाता है?यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 1 (3.33%) हॉ में तो 29 (96.67%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, हर महाविद्यालय का वार्षिक बजेट निर्धारीत होता है उसी कारण कोणसे क्रियाओं को कितना धन खर्चा करना है यह पहले से ही तय होता है।

शारीरिक शिक्षा संचालक यह महाविद्यालय और छात्र के बिच का दुआ हो सकता है?यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 30 (100. 00%) हॉ में तो 0 (00.00%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, शारीरिक शिक्षा संचालक यह इस तरह के शिक्षक होते है की छात्र उन्हे अपने नजदीक का समझ कर सभी परेशानिया बताते है उसी के साथ अनुशासन रखना, नियंत्रण रखना यह सभी कार्य शारीरिक शिक्षा संचालक करते रहते है।

शारीरिक शिक्षा संचालको दुसरे अधिव्याख्याताओं के समान महाविद्यालय में आनेके समय का बंधंन होता है क्या?यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 24 (80.00%) हॉ में तो 6 (20.00%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, शारीरिक शिक्षा संचालको दुसरे अधिव्याख्याताओं के समान महाविद्यालय में आनेके समय का बंधंन होता होगा।

शारीरिक शिक्षा संचालक यह अपनी जिम्मेदारी बखुब पुरा करते है?यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 20 (66.67%) हॉ में तो 10 (33.33%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, शारीरिक शिक्षा संचालक यह अपनी जिम्मेदारी बखुब पुरा करते होगे।

महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा संचालक पुरी तरह से आपना कार्य एवं जिम्मेदारियों को निभाते है?यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 25 (83.33%) हॉ में तो 5 (16.67%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा संचालक पुरी तरह से आपना कार्य एवं जिम्मेदारियों को निभाते होगे।

महाविद्यालय का नाम बढाने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक पुरी तरह से योगदान देते है?यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 17 (56. 67%) हॉ में तो 13 (43.33%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, महाविद्यालय का नाम बढाने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक पुरी तरह से योगदान देते होगे।

महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा संचालक यह खेल एवं क्रीडाओं के अलावा जिम्मेदारी सभालने में सक्षम है?यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 29 (96.67%) हॉ में तो 1 (3.33%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा संचालकों को जो शिक्षा प्रदान की जाती है उसमें सभी तरह की जिम्मेदारियों को सभालने की योग्यताएँ निर्माण हो जाती है।

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना, छात्रसंघ निवडणूक, एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को करने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक यह मदगार है क्या? यह कथन प्रधानाचार्यों से पुछे पर 21 (70. 00%) हॉ में तो 9 (30.00%) नहीं में मत व्यक्त किया है। इसका यह कारण हो सकता है की, महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना, छात्रसंघ निवडणूक, एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को करने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक यह मदगार सिध्द होते होगे।

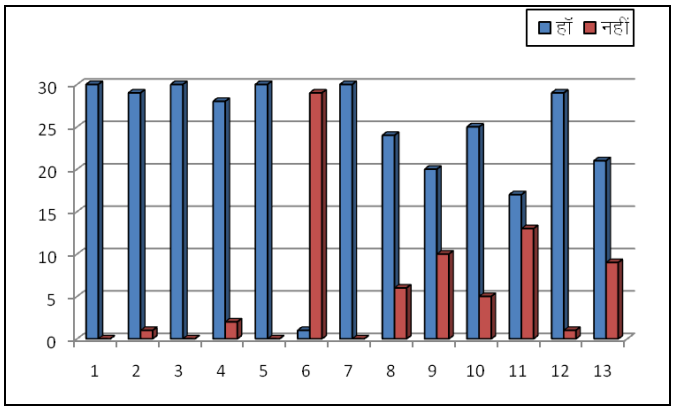

आलेख क्र. 1: शारीरिक शिक्षा संचालकों का कार्यभार तथा जिम्मेदारियों का मूल्यांकन करने के लिए प्रधानाचार्यों के मत प्रमाण को दर्शानेवाला आलेख

निष्कर्षः

अनुसंधानकर्ता को अपने अध्ययन के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए, जो इस प्रकार से हैः

महाविद्यालय में अनुशासन, छात्रों के सर्वांगिन विकास, खिलाडियों का निर्माण करना तथा महाविद्यालय में शारीरिक शिक्षा संचालक पुरी तरह से आपना कार्य एवं जिम्मेदारियों को निभाते है। महाविद्यालय का नाम बढाने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक पुरी तरह से योगदान देते है तथा खेल एवं क्रीडाओं के अलावा जिम्मेदारी सभालने में सक्षम होते है। महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना, छात्रसंघ निवडणूक, एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को करने के लिए शारीरिक शिक्षा संचालक यह मदगार सिध्द होते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिहं अजमेर एवं अन्य, (2004). शारीरिक शिक्षा तथा ऑलम्पिक अभियान, नई दिल्लीः कल्याणी पब्लिकेशन, पृ.3.
2. वर्मा व्यास देव और त्यागी विरेन्द्र नाथ (2002). शारीरिक शिक्षा अध्यापक, नई दिल्लीः एच.जी. पब्लिकेशन, पृ. 476.
3. गुप्ता, राकेश (2005). शारीरिक शिक्षा एवं व्यवसायिक तैयारी, नई दिल्लीः ड्गेंडस् पब्लिकेशन.
4. कंवर, आर. सी. (1998). शारीरिक शिक्षा का मौलिक आधार, नागपुरः अमित ब्रदर्स् पब्लिकेशन प्रथम संस्करण.
5. दुनाखे, अरविंद (2009). शिक्षण प्रशिक्षण, पुणेः प्रकाशक मिलींद जोगळेकर रक्षलिखा सोसाटी, दत्तवाडी.
6. कमलेश, एम. एल. आणि संगराल, एम. एस. (1999). शारीरिक शिक्षा के सिध्दांत तथा इतिहास, लुधीांणाः टंडन पब्लीकशेन.